Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025 : Page No.-214-216

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-1 (Jan.-June) 2025
Page No- 214-216
©2025 Shodhaamrit
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

बबिता कुमारी
NET, JRF
क्रमांक–BR04600116
पैट क्रमांक–E2209003
हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा.

Corresponding Author :
बबिता कुमारी
NET, JRF
क्रमांक–BR04600116
पैट क्रमांक–E2209003
हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा.

कवि सुरेन्द्र स्निग्ध की हिन्दी सेवा

सार–संक्षेप : हिन्दी साहित्य, विशेष रूप से कविता, एक समृद्ध एवं विविधतापूर्ण परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है। इस परंपरा में अनेक महान कवियों ने अपने अद्वितीय विचारों, भावनाओं और शैलीगत नवाचारों के माध्यम से हिन्दी कविता को एक नई दिशा और पहचान प्रदान की है। ऐसे ही एक महत्वपूर्ण नाम हैं सुरेन्द्र स्निग्ध, जिन्होंने अपनी कविता के माध्यम से न केवल हिन्दी साहित्य की शान बढ़ाई, बल्कि समाज के सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं पर भी गहरी छाप छोड़ी। सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताएँ जीवन की जटिलताओं, मानवीय संबंधों और प्रकृति के सौंदर्य के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती हैं। उनकी काव्यशैली में एक अद्भुत गहराई है जिससे पाठक की भावनाएँ जुड़ती हैं। सुरेन्द्र स्निग्ध की कविता का एक विशेष पहलू उनकी संवेदनशीलता है। उनकी कविताएँ आम जनता के दुःख–दर्द, संघर्ष और आकांक्षाओं को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती हैं। वे उस समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का बारीकी से अवलोकन करते हैं और उसे अपनी कविता में पिरो देते हैं। सुरेन्द्र स्निग्ध की विशेषता है कि वे सरल और सहज भाषा का उपयोग करते हैं। उनके काव्य में अपार गहराई और जटिलता होते हुए भी, वह भाषा का सरल औजार बनाते हैं, जिससे उनके विचार सामान्य पाठक तक पहुँच पाते हैं। उनकी कविताएँ पाठकों को एक गहरी चिंतन प्रक्रिया में डुबो देती हैं। उनकी काव्य रचनाएँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि वे पाठकों को अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों का एहसास भी कराती हैं।

परिचय : भारतीय साहित्य, विशेष रूप से हिन्दी कविता, अनेक प्रतिभाशाली कवियों के योगदान से समृद्ध हुई है। इनमें सुरेन्द्र स्निग्ध एक अद्वितीय स्थान रखते हैं। उनका काव्य साहित्य न केवल भाषा की गहराई और बोधगम्यता के लिए जाना जाता है, बल्कि उनकी कविताएं मानव अनुभवों, भावनाओं और संवेदनाओं का सुक्षम चित्रण भी करती हैं। सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताएं जीवन के विभिन्न आयामों को छूती हैं। उनके काम में प्रेम, दुःख, संघर्ष और सामाजिक अन्याय जैसे विषय प्रमुखता से दिखाई देते हैं। एक ओर जहाँ उनकी प्रेम कविताएं मनुष्य के भीतर की गहराई को उजागर करती हैं, वहीं दूसरी ओर उनकी सामाजिक टिप्पणियां विस्तृत दृष्टिकोण से समस्याओं को उजागर करती हैं। उनकी कविता में मानवता के संघर्ष को बड़े आत्मीयता से चित्रित किया गया है, जो पाठक को गहराई में जाकर सोचने के लिए मजबूर करता है। सुरेन्द्र स्निग्ध की काव्य शैली एक अद्वितीय विशेषता है। उनका लेखन सरल, लमज अर्थपूर्ण है। वे शब्दों का चयन इस प्रकार करते हैं कि हर कविता का एक गहन मर्म होता है। उनका काव्य भाषा का प्रवाह, अलंकारिकता, और संगीतात्मकता की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। वे अक्सर नारों, मुहावरों और लोक भाषा का उपयोग करते हैं, जिससे उनका काव्य आम जन के साथ संबंध स्थापित कर पाता है। उनकी कविताओं में 'तुलना' एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो विभिन्न वस्तुओं और भावनाओं के बीच साम्य और भिन्नता को उजागर करता है।

सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताएं केवल व्यक्तिगत अनुभवों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का भी ध्यान रखती हैं।

उन्होंने हिन्दी कविता में एक सामाजिक चेतना की लहर को प्रवाहित किया है। उनकी कई कविताएं न केवल व्यक्तिगत संवेदनाओं को व्यक्त करती हैं, बल्कि सामाजिक असमानताओं, भ्रष्टाचार, और अन्याय के खिलाफ भी आवाज उठाती हैं। उनकी कविता अत्यंत प्रभावशाली है, जहाँ उन्होंने समाज में फैले कुरीतियों और अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष करने का आह्वान किया है। यह कविता न केवल काव्यात्मक उत्कृष्टता का उदाहरण है बल्कि यह सामाजिक जागरूकता का भी प्रतीक है। उनकी काव्य यात्रा में अनेक मोड़ आए। सुरेन्द्र स्निग्ध ने केवल कविता नहीं लिखी, बल्कि उन्होंने विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं में भी सक्रिय भागीदारी की। उनकी रचनाएँ 'संदर्भ', 'कविता' और 'धर्मयुग' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं, जहाँ उनकी कविताओं को व्यापक पाठक वर्ग ने सराहा। इसके आलावा, स्निग्ध जी ने कई काव्य गोष्ठियों और साहित्यिक समारोहों में अपने विचार साझा किए, जिससे उनकी रचनाओं का दायरा और विस्तृत हुआ।

सुरेन्द्र स्निग्ध का योगदान केवल उनके रचनात्मक कार्यों तक सीमित नहीं है। उन्होंने युवा कवियों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न कार्यशालाओं का आयोजन भी किया। उनकी शैली और दृष्टिकोण को समझने के लिए, उन्होंने अनेक साहित्यिक मंचों पर अपने अनुभव साझा किए। युवा कवियों के लिए वे प्रेरणा के स्रोत बने और उन्हें साहित्य की चुनौतियों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया। कुल मिलाकर, सुरेन्द्र स्निग्ध का योगदान हिन्दी कविताओं के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी कविताएँ न केवल उनके व्यक्तिगत अनुभवों और दृष्टिकोणों का प्रदर्शन करती हैं, बल्कि वे समाज के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर करती हैं। उनकी रचनाएँ पाठकों को सोचने पर मजबूर करती हैं और उन्हें एक नए दृष्टिकोण से जीवन के विभिन्न पहलुओं की ओर देखने का अवसर प्रदान करती हैं। सुरेन्द्र स्निग्ध की कविताओं का संग्रह महज शब्दों का एक समूह नहीं है, बल्कि यह मानव अनुभव की गहराई और संवेदनाओं का एक अमूल्य दस्तावेज है। उनके योगदान को न केवल वर्तमान में, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों द्वारा भी स्मरण किया जाएगा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि सुरेन्द्र स्निग्ध ने हिन्दी कविताओं के क्षेत्र में एक नई दिशा दी है, जो आने वाले समय में भी प्रेरित करेगी।

यह कवि वस्तुतः सपनों एवं जीवनानुभवों का सच्चा कवि है। इनकी कविताओं में काव्यात्मक कला न भी हो, तो भी इनकी कविताएं अभिधात्मक होते हुए भी अपना लोहा सहज ही मनवा लेती हैं। उसका कारण उनकी सहज, सरल एवं प्रांजल भाषा–शैली है जो पाठकों तक सहज की संप्रेषणीयता बनाते हुए उनके ह्रदयों में एक स्नेहिल स्थान बना लेती हैं। वस्तुतः किसी भी कवि की यही सबसे बड़ी सफलता है। वरना वर्तमान में अधिकांश कवि कविता के नाम पर जो लिखते हैं, उनमें कवित्व होता ही नहीं है, सपाट गद्यांश होता है। कवित्व के अभाव में उनका कोई अस्तित्व ही नहीं रह जाता और वह रचना निष्प्राण–सी लगने लगती है। इसके ठीक विपरीत स्निग्ध जी की कविताएं चाहे अभिधात्मक है, किन्तु उनमें कवित्व तो है, जो पाठकों के ह्रदयों में सहज ही स्थान बना लेता है। वस्तुतः आज आम पाठकों हेतु ऐसी भी सहज–सरल कविताओं की आवश्यकता है।

एक कवि के रूप में स्निग्ध जी की काव्य–यात्रा पर दृष्टि डालें तो उनके काव्य–संसार में प्रेम, सौन्दर्य और मुक्ति का स्वर प्रधान है। उन्होंने प्रेम किया, जाति तोड़कर शादी की और एक समर्पित मार्क्सवादी एक्टिविस्ट की हैसियत से कई जन–आन्दोलनों में भाग लिया। केवल भाग ही नहीं लिया, जेल भी गए। उनके इस जुझारूपन के बरक्स उनके कई समकालीन चर्चित मार्क्सवादी कवि निष्प्रभाव होते प्रतीत होते हैं। लेकिन सच तो सच है कि जनपक्षधरता को कविता–कहानी में परोसते रहना लेकिन जन–संघर्ष के उत्ता से हमेशा बचना–वह ऐसे बहुतेरे कवियों लेखकों की प्रकृति है। यहीं स्निग्ध जी की प्रकृति के साथ की गहरी अंतरंगता याद आती है जो उनकी कविता के मानचित्र को शब्द, स्पर्श, गंध और रंग–रसों में रंग देती है, पूरी तरह भर देती है। कवि प्रकृति से जितना गरहे जुड़ता–बंधता है वह जीवन से गहरा प्यार करता है। यह यहाँ सहज संलग्नता से कवित्व का रूप ग्रहण करता है। 'शब्द और रंग' शीर्षक कविता की इस पंक्ति में जीवन–जगत और उसके अपरूप सौंदर्य के प्रति प्रेमभूत कवि की वह तड़प देखी जा सकती है, जो पूरे चांद की रात और सागर की तरंगों पर मचलती चांदनी की एक–एक किरण को शब्दों में समेट लेना चाहता है।

सुरेन्द्र स्निग्ध यों तो सर्वविधा सम्पन्न व्यक्ति थे किन्तु उनकी मुख्य पहचान एक कवि के रूप में ही थी। एक रचनाकार के रूप में सुरेन्द्र स्निग्ध के छह कविता–संग्रह प्रकाशित है :

1. पके धान की गंध
2. कई–कई यात्राएं
3. रचते–गढ़ते
4. अग्नि की इस लपट से कैसे बचाऊँ कोमल कविता
5. मां, कामरेड और दोस्त
6. संघर्ष के एस्ट्रोटर्फ

जिनमें 'संघर्ष के एस्ट्रोटर्फ पर' उनका अंतिम काव्य–संग्रह था, जो 2016 ई0 में प्रकाश में आया। इस काव्य–संग्रह में उनकी कविताओं के अनेक रंग एक ही पुस्तक में देखने को मिलती है, जो यह सिद्ध करती है कि स्निग्ध में काव्य के स्तर पर पर्याप्त विषय–वैविध्य था। 'संघर्ष के एस्ट्रोटर्फ पर' में कुल मिलाकर सड़सठ कविताएं हैं, जिनमें मुख्यतः प्रेम, स्वप्न, सौंदर्य और उनके विराट् जीवनानुभव को समेटे हुए पूरी दक्षता के साथ प्रस्तुत हुई है। प्रो0 स्निग्ध जनवादी विचारधारा के कवि के रूप में पॉपुलर रहे। उन्होंने दबे–कुचले, उपेक्षित एवं श्रमिक वर्ग को अपनी कविताओं में प्रमुखता के साथ अलगाया। इस वर्ग की पीड़ा को, उनकी भावनाओं को विषयानुकूल शिल्प में प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष : निष्कष के तौर पर कहा जा सकता है कि सुरेन्द्र स्निग्ध हिन्दी कविता के एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उनका

योगदान न केवल उनकी कविताओं में देखा जा सकता है, बल्कि वे अपने दृष्टिकोण और विचारों के माध्यम से एक नई दिशा प्रदान करते हैं। उन्होंने हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने के साथ ही हिन्दी कविता के काव्यात्मक आयामों को भी विकसित किया है। उनकी कविताएँ न केवल साहित्यिक मूल्य रखती हैं, बल्कि वे समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी का भी एहसास कराती हैं। सुरेन्द्र स्निग्ध का लेखन आने वाले समय में भी प्रेरणादायक रहेगा और उनकी कविताएँ न केवल पाठकों को आत्म–साक्षात्कार का अनुभव कराएँगी, बल्कि उन्हें सामाजिक बदलाव के लिए भी प्रेरित करेंगी। उनका योगदान हिन्दी काव्य जगत में सदा स्मरणीय रहेगा और उनकी रचनाएँ आगामी पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध स्रोत बनकर रहेंगी।

संदर्भ स्रोत :

1. प्रो. नंदकिशोर नंदन, प्रेम, सौन्दर्य, करुणा एवं संघर्ष के योद्धा स्निग्ध, पृ. 82
2. गौरीनाथ, प्रेम जल से लबालब भरा इंसान, पृ. 114
3. श्रीधर करुणानिधि, सुरेन्द्र स्निग्ध का साहित्य, पृ. 118
4. डॉ. रमाशंकर आर्य, स्पष्ट और आडम्बरहीन व्यक्तित्व, पृ. 129
5. डॉ. शिवनारायण, सुरेन्द्र स्निग्ध की यादें, पृ. 134
6. संतोष दीक्षित, सुरेन्द्र स्निग्ध को शत्–शत् नमन, पृ. 145
7. सुधीर सुमन, गहरी नींद के लिए अनंत की ओर, पृ. 148
8. अनिल अंशुमान, जनसरोकार के रचनाकार, पृ. 154
9. डॉ. ध्रुव कुमार, सर्वहारा की आवाज, पृ. 174

•